द्वितीय अध्याय

" हिन्दी का ऐतिहासिकउपन्यास साहित्य "

पृ. 20 से 60

ऐतिहासिक उपन्यासको पृष्टभूमि स्वरूप

उपन्यासका महत्व

उपन्यास के भेद

इतिहास का अर्थ एवं परिभाषाऐं

ऐतिहासिक एवं ऐतिहासिकता को परिभाषाऐं

ऐतिहासिक कथा साहित्य को परिभाषाऐं / स्वरूप

ऐतिहासिक उपन्यासका उद्देश्य

ऐतिहासिक उपन्यासका प्रारंभ

ऐतिहासिक उपन्यासके तीन उत्थान

ऐतिहासिक काल खंड के अनुसार उपन्यासोंका वर्गीकरण

यशपाल के ऐतिहासिक उपन्यास :

"दिव्या"

"अमिता"

"झूठा सच"

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

द्वितीय अध्याय

पृ. २० से ७० तक

ऐतिहासिक उपन्यास - की पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक उपन्यासों की विषय-वस्तु इतिहास पर आधारित होती है। इसमें ऐतिहासिक कथा-रचना के लिए यह आवश्यक है कि उपन्यासकार इतिहास के जिस युगसे कथा के सूत्र ले रहा हो, उस युग की पृष्ठभूमि और वातावरण का भली प्रकार अध्ययन करे। ऐतिहासिक उपन्यासमें इतिहास तथा वर्तमान का तथा यथार्थ और कल्पना का संतुलित समन्वय होना चाहिए और ऐतिहासिक विकास के किसी भी युगसे कथा का चयन क्यों न किया गया हो, उस युग की पृष्ठभूमि और विवरण कथा के निर्वाह एवं विकास के लिए आवश्यक होता है।

ऐतिहासिक उपन्यासों के चरित्र-चित्रण का सम्बन्ध मुख्या पात्रोंका इतिहास सिध्द होना आवश्यक है। उन पात्रोंके कार्य-कलापकाभी अधिकांश भाग ऐतिहासिक दृष्टिसे प्रामाणिक होना चाहिए। चरित्रों के सम्बन्ध में यथार्थता और कल्पना-त्मकता का प्रश्न गम्भीर रूपसे विचारणीय हो जाता है। ऐति-हासिक उपन्यास में लेखक किसी पात्र को इतिहासमें मिलनेवाले सामान्य विवरण के आधारपर प्रस्तुत करता रहता है। इसी कारण लेखक जैसा भी स्वरूप प्रस्तुत करता है, हम उसे यथार्थ मान लेते हैं।

हिन्दी के उपन्यासके क्षेत्रमें ऐतिहासिक कथाको जो प्रवृत्ति मिलती है, उसका आरम्भ तो भारतेन्दु युग में ही हो चुका

था, परन्तु आधुनिक युगके ऐतिहासिक उपन्यास कारोंमे अपना अलग अस्तित्व यशपाल जी ने रखा है।

उपन्यास का महत्व :-

उपन्यास सम्राट प्रेमचंदने उपन्यास के महत्व को विशद करते हुए उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार दी है -

" मै उपन्यासको मानव-चरित्र का चित्र-मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उनके रहस्योंको खोलना ही उपन्यासका मूलतत्व है।"[1]

इस दृष्टिसे उपन्यास के संबंध में कहा जाता है कि - उपन्यास मानव - जीवन का, उसके समग्र रूपमें चित्रण-प्रस्तुत करनेवाला आधुनिक युगमें सबसे सशक्त साहित्य माध्यम है। उपन्यास गद्य साहित्य का वह समर्थ रूप है, जिसमें प्रबंध काव्यका - सा सुसंगठित वस्तुविन्यास, महाकाव्य की-सी व्यापकता गीतों की सी मार्मिकता नाटकों का-सा प्रभाव तथा छोटी कहानी की-सी कलात्मकता एक साथ मिल जायेगी।

उपन्यास के भेद :-

प्रारंभिक युगमें उपन्यास का क्षेत्र इतना व्यापक न था, लेकिन आज आधुनिक युगमें उपन्यास साहित्य का विकास युग जीवनके विविध क्षेत्रों और साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों मे व्यापक रूपसे हुआ है। बादमें उपन्यास के साहित्यिक और कलात्मक स्वरूप का विकास हुआ। इस दृष्टिसे उपन्यास के भावी विकास का

क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक व्यापक होनेके लिए उपन्यासके निम्नलिखित भेद किये जाते है।

१] ऐतिहासिक उपन्यास
२] सांस्कृतिक उपन्यास
३] सामाजिक उपन्यास
४] समस्याप्रधान उपन्यास
५] प्राकृतिक उपन्यास
६] आदर्शवादी उपन्यास
७] नीतिप्रधान उपन्यास
८] यथार्थवादी उपन्यास
९] आदर्शोन्मुख उपन्यास
१०] समाजिक यथार्थवादी उपन्यास
११] अतियथार्थवादी उपन्यास
१२] मनोवैज्ञानिक उपन्यास
१३] राजनीतिक उपन्यास
१४] तिलस्मी उपन्यास
१५] जादूई उपन्यास
१६] जासूसी उपन्यास
१७] वैज्ञानिक उपन्यास
१८] लोककथात्मक उपन्यास
१९] आंचलिक उपन्यास

"इतिहास" का अर्थ एवं परिभाषाऍ

इतिहास एक दर्पण है। वह भूत को हू-ब-हू छबि तो रखा देता ही है लेकिन वह वर्तमान को प्रेरणा भी देता है, और

भाविषयकी सूचनाएँ भी दे सकता है।

विभिन्न शब्दकोशोंमें "इतिहास" के मूल अर्थ निम्न प्रकार से मिलते हैं।

१] "संस्कृत हिन्दी कोश" में इतिहास शब्द का अर्थ इस तरह बताया है कि - इतिहास = [इति - ह - आस] असें, धातु, लिटलकार, अन्य पं.ए.व.]

१] इतिहास [परंपरासे प्राप्त उपाख्यान समूह] -
"धमार्थकाम मोक्षाणामुपदेश समन्वितम्, पूर्ववृत्तं - कथायुक्त मितिहासं प्रचक्षते।"

२] वीरगाथा [जैसा कि महाभारत]

३] ऐतिहासिक साक्ष्य, परंपरा [जिसको पौराणिक एक प्रमाण मानते है]।

सम-निबन्धनम् - उपाख्यान युक्त या वर्णनात्मक रचना।[2]

२] "मानक हिन्दी कोश" पहला खण्ड [अ-क] में इतिहास का अर्थ - पुं. [सं.इतिह, द्र.स. इतिहास इतिह आस [बैठना।]

१] किसी व्यक्ति, समाज या देश की महत्वपूर्ण विशिष्ट या सार्वजनिक क्षेत्रकी घटनाओं, तथ्यों आदि का काल क्रम से लिखा हुआ विवरण।

२] किसी वस्तु या विषय की उत्पत्ति, विकास आदि का कालक्रम के अनुसार होनेवाला विवेचन।[3]

३] "हिन्दी शब्द सागर" [प्रथम खण्ड] द्वारा इतिहास का अर्थ प्रस्तुत किया गया है कि - इतिहास - संज्ञा पु. [सं]

१] बीती हुई प्रसिध्द घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले पुरुषोंका काल-क्रम से वर्णन।

२] वह पुस्तक जिसमें बीती हुई प्रसिध्द घटनाओं और भूत पुरुषोंका वर्णन हो।

३] किसी विषयमें संबन्धित तत्थ्योंका आदिकाल से वर्तमान।

४] कथा। वृत्त।[4]

४] प्रसिध्द विद्वान डॉ. गौरी शंकर हिराचंद ओझा के विचार से - " अतीत के गौरव तथा घटनाओं के उदाहरणों से मनुष्य जाति एवं राष्ट्र में जिस संजीवनी शक्ति का संचार होता है उसे इतिहास के अतिरिक्त अन्य उपायोंसे प्राप्त करके सुरक्षित रखना कठिन ही नहीं प्रत्युत, एकप्रकार से असम्भव है। इतिहास भूतकाल को अतीत स्मृति तथा भविष्य को अदृश्य सृष्टि को ज्ञान रूपी किरणोंद्वारा सदा प्रकाशित करता रहता है। "[5]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधारपर इतिहास शब्द के निम्न भिन्न-भिन्न अर्थ प्राप्त होते हैं -

इतिहास शब्द का व्युत्पत्ति मूलक अर्थ इस प्रकार दिया जाता है -

इति - ह - आस = "ऐसा हुआ" अथवा "यह ऐसा हुआ"

इति आस [बैठना] बीती घटनाको निकटतासे परखना।

इन व्युत्पत्यात्मक अर्थों के अतिरिक्त इतिहास शब्द के अर्थ विस्तार को निम्न-प्रकारसे बताया गया है।

१] इतिहास अतीत की प्रमाणित सत्य घटनाओंका लेखा - जोखा होता है।

२] इतिहास केवल राजाओं या व्यक्तियोंके जीवनका लेखा-जोखा मात्र नहीं है। वह युग विशेष की समस्त सांस्कृतिक धरोहर का लेखा - जोखा है।

३] भविष्य के लिए प्रेरक, अतीत की घटनाएँ।

सारांश में - इतिहास अतीत की सत्य घटनाओंका गवेषणापूर्ण काल-क्रम-बध्द ऐसा विवरण है जो उस समाज देश या व्यक्ति कीसाधारण घटनाओं के अतिरिक्त पुरे समाज या जाति की संस्कृति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। यह पुराण, कल्पित कथा, धर्मशास्त्र नहीं है, बल्कि वास्तव जीवन का जीवंत लेखा है।

रामनारायण सिंह "मधुर" ने इतिहास का अर्थ इस तरह दिया है, "इतिहास का अर्थ है - इति - ह - आस अर्थात "यह ऐसा हुआ" या "ऐसा हो था" इसका अभिप्राय यह हुआ कि इतिहासमें घटनाओंका यथार्थ वर्णन होता है। इस दृष्टिसे अतीत के किसी भी वास्तविक विवरण को इतिहास की संज्ञा दी जा सकती है।"[6] अतीत के पक्षको इतिहासकार अपनी अपनी रूचि के अनुसार अपने - अपने शब्दों में व्यक्त करते है।

इतिहासका मंतव्य केवल अतीत का विवरण प्रस्तुत करना ही नहीं है। आज इतिहास, इतिहासवाद [हिस्टरी सिज़्म] इतिहास का लेखन [हिस्टरियाग्राफी] तथा इतिहास दर्शन आदि के क्षेत्र विकसित कर चूका है। क्रोचे ने इतिहास की परिभाषा इस

तरह दी है - " सारा इतिहास वस्तुत: समसामयिक इतिहास है।"[7] क्रोचे अनुयायी कलिंगवुड ने इतिहास की व्याख्या इस तरह दी है - " वह सम्पूर्ण तत्थ्य जगत जिसका स्पष्ट अध्ययन इतिहास में होता है, अध्येता के सूक्ष्म मानसिक तत्वसे भिन्न कुछ नही है।"[8] तटस्थाता का इतिहास में कोई अर्थ नहीं है। आदर्शवादी दृष्टिकोनका परिचय देते हुये, ऐतिहासिक दर्शन के विद्वान डब्लू. एच्. वॉल्स ने कहा है - " सर्वथा निर्वैयक्तिक इतिहास आदर्श तो हो सकता है, किन्तु यथार्थ में वह पूर्णत: असंभव है। हर इतिहासकार अपने विशिष्ट दृष्टिकोन से इतिहास को देखता है। जिससे अलग होना उतनाही कठिन है, जितना प्राणोंका शरीर से भिन्न होना।"[9] कामते और उसके अनुयायी ऐतिहासिक अनुशीलनमें निर्वैयक्तिकता और तटस्थाता के पक्षपाती है। डॉ. रमेश कुन्तल ने भी इतिहास के बारे में कहा है - " क्या इतिहास घटनाओंका सतही प्रवाह ही है ?"[10] इस तरह के अनेक प्रश्न कुन्तल ने उठाकर उत्तर देने का प्रयत्न किया है। इतिहास काल की निरंतरता को सिध्द करता है। हम अतीत और भविष्य के बीच अवरोध नहीं पाते। इतिहास मानवीय समाज से सम्बन्धित होता है। यह इसके विकास की कहानी को पेश करता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इतिहास विवेकशील अध्ययन है - जिसमें मानवीय स्वभाव चेतना तथा कर्म का सब कालों [अतीत, वर्तमान, भविष्य] के लिए समावेश होता है। इतिहास पूर्णतया विज्ञान नहीं है, और न तो मात्र घटनाओं का सगुम्फन तथा महान पुरुषों की गाथा है। बल्कि वह मानवीय सत्योंकी खोज है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य के विगत सामाजिक,

आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन से स्थापित किया जाता है।

इतिहासकार अपने युगजीवनसे प्रभावित होता है, इसी कारण इतिहास लेखन में तटस्थता नहीं रहती और यथा सम्भव कल्पना का प्रयोग करना ही पड़ता है। "भारत के प्राचीन इतिहास के जानकारी के लिए इतिहास कारोंने सत्य काही सहारा लिया है। इतिहासकारोंने इतिहासको वेशभूषा भित्ति चित्र, वस्तु, मूर्तियाँ, पांडुलिपियों, शिलालेख, सिक्के, दस्तावेज आदि के आधारपर ही खड़ा किया है।" 11

ऐतिहासिक उपन्यासमें इतिहास की अपेक्षा कल्पना का आधिक्य रहता है, परन्तु कल्पना का आधार ही ऐतिहासिक सत्य है। अँग्रेजी पर्यायी शब्द [Novel] मिलता है। इसी धारणा के कारण पालग्रेव ने "ऐतिहासिक उपन्यास को इतिहासका शत्रु कहा था।" बेझाट ने भी इतिहास की तुलना कुछ इस तरह की है - " इतिहास हमारे लिए और ऐतिहासिक उपन्यास की केवल "भूमियों" से भरा या खण्डित पाषाणों से भरा अजायब घर नहीं है, वह बहते हुए जलप्रवाहमें पड़ी हुई प्राचीन दुर्ग-मीनार की छाया के समान है। मीनार पुरानी रहनेपर भी पानी नया रहता है।" 12उसका अभिप्राय है, कि इतिहास के तत्थ्य तो वही पुराने रहते है और ऐतिहासिक उपन्यास लेखक की भी यही समस्या है, कि उसके पैर तो जमीनपर है, वह सांस इस युग और निमिष में ले रहा है, किन्तु उसका स्वप्न पुरातन है, फिर भी नवीन है। एक ही ऐतिहासिक विषयपर विभिन्न इतिहासकार विभिन्न प्रकारसे लिख सकते है। यहीं बात ऐतिहासिक उपन्यासकारों के सम्बन्ध में सत्य है। वे भी अपनी रचना को विभिन्न दृष्टिकोन से प्रस्तुत

करते है। चाणक्य पर लिखे गए विविध भारतीय भाषाओं के उपन्यास इसके प्रमाण है। चंद्रगुप्त विद्यालंकार का हिन्दी में लिखा "आचार्य चाणक्य" मराठी में लिखा हरि नारायण आपटे का चंन्द्रगुप्त" आणि चाणक्य" लेखकोंके दृष्टिकोन के कारण भिन्न है।

सारांश में ऐतिहासिक उपन्यासकार अपने आपमें कोई अन्तर विरोधी वस्तु नहीं है। वह एक ऐसी कलाकृति है, जिसका आधार इतिहास है। इतिहास लेखक और ऐतिहासिक उपन्यासकार की मनोरचना लक्ष्य, रचना-पध्दति आदि में भेद होता है। यही कारण है कि उसकी कृतियों इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यासों में भी शिल्प सम्बन्धी अंतर होता है।

ऐतिहासिक एवं ऐतिहासिकता की परिभाषाएँ

इतिहास शब्द के तात्पर्य की स्थापना के पश्चात अब हम ऐतिहासिक एवं ऐतिहासिकता की परिभाषाएँ देखेंगे -

१] "संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर" में ऐतिहासिक परिभाषा इस तरह प्रस्तुत की गई है - ऐतिहासिक - वि. [सं.]

१] इतिहास सम्बन्धी। जो इतिहास में हो।

२] जो इतिहास मानता हो।

ऐतिहासिकता - सं. स्त्री [सं.]

१] ऐतिहासिक होनेका भाव।

२] प्राचीनता।[13]

२] "संस्कृत हिन्दी कोश" में - ऐतिहासिक - [वि] [स्त्री-की]
[इतिहास - ठक]

१] परंपरा प्राप्त २] इतिहास सम्बन्धी - क: १ इतिहासकार वह व्यक्ति जो पौराणिक उपाख्यानोंको जानता है या उनका अध्ययन करता है।[14]

इन परिभाषाओं के आधारपर "ऐतिहासिक" शब्द का तात्पर्य निकलता है - इतिहास - सिध्द अतीत की घटनाओं का लेखा - जोखा। यह शब्द इतिहास का विशेषण है।

ऐतिहासिक कथा - साहित्य की परिभाषाएँ

यहाँ प्रमुखत: ऐतिहासिक उपन्यासोंकी परिभाषाएँ दी जा रही है -

१] श्री आर्थर मिल ने अपनी पुस्तक " ए स्टडी ऑफ इंग्लिश फिक्शन सेल्फ एडयूकेटर" में ऐतिहासिक उपन्यास के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार प्र-कट किये है -

" ऐतिहासिक उपन्यासोंका लेखक इतिहास की दृष्टिसे गौण किंतु सच्ची घटनाओंको आपने कथानक के अनुकूल बनाने के लिए बदल देता है और कुल मिलाकर कुछ ऐसा चित्र उपस्थित करता है, जो इतिहास की अपेक्षा जीवन के अधिक निकट होता है। केवल अपनी मानसिक कल्पनाओं द्वारा उपन्यासकार हमारे समक्ष सच्चाई का एक ऐसा स्वरूप उपस्थित करता है, जो इतिहास से अधिक विशद और स्थायी होता है।"[15]

ऐतिहासिक उपन्यासकी परिभाषा करते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदीजीने लिखा है -

" ऐतिहासिक उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जिसमें अतीतकालीन पात्र, वातावरण एवं घटनाओंके ज्ञात तथ्योंको कल्पनासे मांसल और जीवंत बनानेका प्रयास होता है।" 16

उपरयुक्त परिभाषाओंके आधारपर ऐतिहासिक कथा - साहित्यका स्वरूप इस प्रकार होगा -

१] गवेषणा से प्राप्त तथ्योंके आधारपर अतीत का चित्र।

२] ऐतिहासिक कथा साहित्य में वास्तव घटनाएँ तो अनिवार्य है, लेकिन यह एक साहित्य प्रकार है। अंतत: उसका कलात्मक होना जरुरी है। इसलिए ऐतिहासिक तथ्यको न तोड़ते हुए उपन्यासकार इसमें कल्पना का योग लेता है।

३] उसे - काल - विशेष के आचार-विचार, रहन-सहन, सामाजिक व्यक्तिगत चित्रण।

४] इतिहास प्राय: नेताओंको जीवनीयोंसे जुड़ा रहता है, लेकिन यह ऐतिहासिक कथा- साहित्य के लिए यह अनिवार्य तत्थ्य नहीं है। इसमें मानव-संवेदना कों उजागर करना अधिक महत्त्व रखाता है। अत: लेखक साधारण चरित्रको भी इसमें अंकित कर सकता है।

५] ऐतिहासिक कथा साहित्य भूत के साथ वर्तमान से भी नाता जोड़ता है और भाविष्यको भी प्रेरित कर सकता है।

६] " ऐतिहासिक उपन्यास ऐतिहासिक घटनाके आधारपर निर्मित होते है। ऐतिहासिक घटना तथा पात्रों के आधारपर

लेखक अन्य घटनाओंकी कल्पना कर लेता है जो उस चरित्रकी निर्जि और वास्तविक प्रतीति होती है। देशकाल का यह चित्रण ऐतिहासिक उपन्यास के लिए परमावश्यक है। उनकी सफलता-असफलता देशकाल के निरूपण पर ही आधारित है। वस्तुत : ऐतिहासिक उपन्यास को आवश्यक रूपमें अतीत की कल्पित कहानी ही कहा जा सकता है।" - डॉ. गोविंदजी 17

उद्देश्य

ऐतिहासिक उपन्यासों के स्वरूप के पश्चात ऐतिहासिक कथा - साहित्य के निम्नांकित उद्देश्य होते है -

१] अतीत का वास्तव चित्रण।

२] काल-विशेष का वास्तव सांस्कृतिक चित्रण।

३] वर्तमान से नाता।

४] भविष्य के लिए प्रेरणा।

५] वास्तव में कल्पना के योग से कला की निर्मिती।

ऐतिहासिक उपन्यासका प्रारम्भ

हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रारंभ वैसे तो प्राचीन कालसेही भारतीय साहित्यमें कथा-कथन की परंपरा चलती आ रहीं है। भारतीय वाड्मय के सबसे प्राचीन रूप "वेद" "उपनिषाद" आदि में अनेक कथाएँ मिलती है। "रामायण" "महाभारत" आदि कथात्मक काव्यग्रन्थोमें उपन्यास के तत्व अधिक मिलते है। "प्राचीन कालमें भारत वर्ष में "दशकुमार रित" "वासवदत्ता" "श्री हर्ष चरित" "कादम्बरी" आदि उपन्यास प्रसिध्द रहे है।" 18

जब आधुनिक कालमें भारतमें हिन्दी उपन्यास लेखन का आरम्भ हुआ था, तब अँग्रेजी शिक्षा और साहित्य का प्रसार भारतमें काफी हुआ था। अँग्रेजी, फ्रेन्च आदि पश्चिमी साहित्यिक कृतियोंका अनुदित कार्य भारतीय विद्वान कर रहे थे। अर्थात हिन्दी उपन्यास के आरम्भ के पूर्व भी भारतीय साहित्य में कुछ औपन्यासिक तत्व मिलते है। पर प्राचीन साहित्य से उपन्यास के निर्माण में विशेष सहयोग नहीं मिला था और ऐतिहासिक अनुसन्धान जिस क्षेत्रमें जितना ज्यादा हुआ, उस क्षेत्रमें वैसा ही ऐतिहासिक उपन्यासका विकास होता गया।

प्रारम्भ में हिन्दी में जासूसी, तिलस्मी एवं ऐय्यारी उपन्यासोंकी भरमार रही। साधारण जनवर्ग तो तिलस्मी, जासूसी तथा ऐय्यारी के पीछे पागल हो रही थी, और ऐतिहासिक उपन्यासो में भी इन्हीं को खोज किया करती थी। इसलिए उपन्यासकार ऐतिहासिक उपन्यास में भी तिलस्मी, ऐय्यारी आदि की सृष्टि किया करते थे। "आचार्य शुक्लजी, श्रध्दाराम फुल्लौरी के "भाग्यवती" नामक उपन्यास को प्रथम सामाजिक उपन्यास मानते है। आचार्य शुक्ल के मतानुसार हिन्दी का यह प्रथम उपन्यास है। इसमें प्रतिपादित विषय के कारण इसका महत्त्व है। यह उपन्यास सन् १८७७ में लिखा गया, जो कई वर्ष के बाद प्रकाशित हुआ। लेकिन अँग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास लाला श्री निवासदास का "परीक्षा गुरु" है। इसका प्रकाशन काल सन् १८८२ है।"[19]

सन १८८९ में किशोरीलाल गोस्वामीने "स्वर्गीय - कुसुम कुमारी" ऐतिहासिक पहला उपन्यास लिखा। उसने ऐतिहासिक

उपन्यासों में भी तिलस्मी, जासूसी, ऐय्यारी पूर्ण घटनाओं की भरमार रही है। इसी कारण वे प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार सिध्द है। हिन्दी में गोस्वामीजी ने ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा का श्री गणेश किया है।

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास के तीन उत्थान

कुछ विद्वानोंके मतानुसार अध्ययन की सुविधा की दृष्टिसे हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों को तीन भागोंमे विभाजीत करते है -

१] प्रेमचंद पूर्व कालके ऐतिहासिक उपन्यास- [१८८९ से १९१७ तक]
२] प्रेमचंद कालीन ऐतिहासिक उपन्यास -[१९१७ से १९२९-३० तक]
३] प्रेमचंदोत्तर कालके ऐतिहासिक उपन्यास [१९३० से आज तक का काल]

ऐतिहासिक कालखंडके अनुसार उपन्यासोंका वर्गीकरण

ऐतिहासिक काल का वर्गीकरण

ऐतिहासिक उपन्यासोंका प्रमुख आधार इतिहास ही होता है। अतएवं उपन्यासोंका वर्गीकरण करने के लिए इतिहास के काल का उचित विभाजन आवश्यक है। ऐतिहासिक उपन्यासके वर्गीकरण का सर्वाधिक उपयुक्त आधार इतिहास ही है कारण ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना तथा सामाजिकता के होते हुए भी इतिहास को प्रधानता रहती है। इसकी प्रमुख घटना ऐतिहासिक होती है और पात्र भी ऐतिहासिक ही होते है।

ऐतिहासिक उपन्यासोंका वर्गीकरण अध्ययन को सुविधा के लिए प्रेमचंद के नामपर किया है, डॉ. सुषमा त्यागीजी द्वारा भी किया है। लेकिन डॉ. सत्यपाल चुघ द्वारा प्रतिपादित वर्गीकरण महत्वपूर्ण माना है।

डॉ. सत्यपाल चुघ सभी अतीतकालीन उपन्यासों को ऐतिहासिक उपन्यास कहना स्वीकार नहीं करते हैं। वे कहते है - " हिन्दी में विभिन्न समीक्षकोने अतीतकालीन उपन्यासोंको, ऐतिहासिक तथा समकालीन उपन्यासोंको सामाजिक अथवा राज-नीतिक आदि कहा है, जो भ्रांतिपूर्ण है।"[20] आगे वे पुनश्च कहते है - "अतीत कालीन उपन्यास सामान्यत: ऐतिहासिक होते है किन्तु ऐतिहासिकता उनकी अनिवार्यता नहीं है।"[21] और यह सही है काल्पनिक कथा एवं पात्रोंको अतीत काल के माध्यमसे प्रस्तुत करनेसे ऐतिहासिकता का भ्रम भी पैदा हो सकता है। हर पाठक पूरे इतिहास का ज्ञाता नहीं हो सकता है। अत: ऐसा उपन्यास ऐतिहासिक समझने की गुंजाईश रहती है। इस भ्रम से दूर रहकर ऐतिहासिक उपन्यासों का कालिक वर्गीकरण ऐतिहासिक विषय के आधारपर भी किया जाता है। कारण ऐतिहासिक विशेष भूमि या देश और काल-खण्ड से सम्बन्धित होता है। अतएव उपन्यासमें वर्णित विषय के अनुरूप इतिहास के काल खण्डानुसार ऐतिहासिक उपन्यासोंका वर्गीकरण करना डॉ. सत्यपाल चुघजीने उचित माना है। डॉ. सत्पाल चुघ द्वारा निम्न प्रकार से ऐतिहासिक उपन्यासों का विवेचन मिलता है।

उपन्यास	सन	लेखक	कथ्य-संकेत
१. पूर्व-वैदिक काल [प्रागैतिहासिक काल]			
१. मुर्दों का टीला	१९४८	रांगेयराघव	मोहनजोदड़ो कालीन जीवन
२. महायात्रा : अंधेरा रास्ता	१९६०	रांगेयराघव	प्रागै. काल से १५०० ई.पू. तक के मानव-विकास की गाथा : इन्द्र मान्धाता से जनमेजय तक।
२. वैदिक काल			
१. दिव्य गंधा	१०४३	बेनीप्रसाद वाजपेयी "मंजुल"	आर्य-अनार्य-संघर्ष ।
२. आदि सम्राट्	१९५६	यादवचन्द्र जैन	मनु श्रध्दा ; "कामायनी" प्रेरित।
३. दिवोदास	१९६१	राहुल सांकृत्यायन	दिवोदास, शम्बर ; आर्य-अनार्य-संघर्ष, १२२० ई.पू. १२००।
४. पणिपुत्री सोमा	१९७२	राजीव सक्सेना	ईशान विष्णु, सोमा, जमदग्नि, बृबु ; ऋग्वैदिक जीवन।
३. वैदिकोत्तर काल			
क. रामायणाश्रित :-			
१. वयंरक्षाम : [दो भाग]	१९५५	चतुरसेन शास्त्री	रावण-राम-संघर्ष।
२. अमित वेग	१९५८	सत्यदेव चतुर्वेदी	हनुमान।

ख. महाभारताश्रित :-

१. देवकी का बेटा	१९५४	रांगेयराघव	कृष्ण।
२. प्रतिदान	१९५७	रांगेयराघव	गुरु द्रोणाचार्य-महाराज द्रुपद-संघर्ष।
३. अवतरण	१९५७	गुरुदत्त	कौरव-पाण्डव तथा उनके पूर्वज।
४. भुवन विक्रम	१९५७	वृन्दावनलाल वर्मा	ऋषिधौम्य, रोमक, अयोध्या।
५. सम्भवामि युगे-युगे	१९६२	गुरुदत्त	अवतार का कार्यक्षेत्र, पाण्डवों के अज्ञातवास का तेरहवां वर्ष।
६. विनाशाय च दुष्कृताम्	१९६३	गुरुदत्त	अवतार-कार्य की सीमा। महाभारतकथा का अन्त।
७. बदलता युग	१९६४	यज्ञदत्त शर्मा	निषादराज की पुत्री मत्स्यगंधा [रजनीगंधा] से आरंभ।

ग. पुराणाश्रित :-

१. मुक्तिदूत	१९४७	वीरेन्द्रकुमार जैन	अंजना-पवनंजय-रोमांस।
२. उमड़ती घटाएँ	१९५४	गुरुदत्त	नहुष, शची, इन्द्र, नारद देवयानी।
३. मणिमय कुण्डल	१९५६	राजेन्द्र शर्मा	राजा सौदास-रानी मदयन्ती गौतम-अहिल्या।
४. देवयानी	१९६२	यज्ञदत्त शर्मा	शुक्राचार्य-पुत्री देवयानी बृहस्पति-पुत्र कच-प्रेमकथा।

५.	तप का तेज रूप के जाले	१९६५	रघुवीरशरण मित्र	इन्द्र, शची, उर्वशी, नारद।
६.	भारत सार्वभौम	१९७२	अरुण	सम्राट् मान्धाता [२७४० ई.पू.]।

अन्य उपन्यास :-

१.	अंधेरे के जुगनू	१९५३	रांगेयराघव	१००० ई.पू. गणतन्त्र शासन प्रणाली।
२.	महायात्रा : रैन और चंदा	१९६०	रांगेयराघव	१५०० ई.पू. से १२०० ई. तक : जनमेजय, अजातशत्रु, हर्ष, पृथ्वीराज चौहान।

४. जनपद काल, या जैन-बौद्ध धर्म-ग्रन्थों का काल

१.	उदयन	?	मिश्रबन्धु	उदयन
२.	अम्बापाली	१९३६	रामरतन भटनागर	प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली।
३.	सिंहसेनापति	१९४४	राहुल सांकृत्यायन	५०० ई.पू. : लिच्छवि सेनापति सिंह-बिम्बसार-संघर्ष।
४.	दिव्या	१९४५	यशपाल	"बौद्धकालीन कल्पना"।
५.	अमिताभ	१९४६	गोविंदवल्लभ पंत	गौतम बुद्ध।
६.	वैशाली की नगरवधू [१-२]	१९४८	चतुरसेन शास्त्री	सोमप्रभ, अम्बपाली, बिम्बसार।
७.	पाटली पुत्र	१९४६	बेनीप्रसाद "वाजपेयी मंजुल"	कुसुमपुर के पाटलीपुत्र नामकरण की कथा ; अजातशत्रु पुत्र [तर्काकार]।

८.	बहती रेता	१९५०	गुरुदत्त	बौध्द-ब्राह्मण-संघर्ष।
९.	वाम-मार्ग	१९५३	गुरुदत्त	चार्वाकों-लिंगायतों का खंडन, वैदिक विचारधारा को स्थापना।
१०.	यशोधरा जीत गयी	१९५४	रांगेयराघव	बुध्द-यशोधरा, नारी का विद्रोह।
११.	तथागत	१९५५	श्रीयुत पथिक	बुध्द का जीवन-चरित्र।
१२.	मल्लमल्लिका	१९५६	यादवचन्द्र जैन	मल्लिका, मल्ल, बन्धुल, प्रसेनजि, अजातशत्रु, विड्डभ।
१३.	वत्सराज	१९५६	रमेशचन्द्र झा	उदयन, वासवदत्ता, मगधराज पुत्री पद्मावती।
१४.	राह न रुकी	१९५८	रांगेयराघव	दधिवाहन, जैन-धर्म का प्रभाव, वर्ध्दमान महावीर बिम्बसार।
१५.	पक्षी और आकाश	१९५८	रांगेयराघव	जैन-धर्म का प्रभाव; बिम्ब-सार, उदयन, वासवदत्ता।
१६.	वत्सराज	१९५३	जगन्नाथ प्रभाकर	उदयन-वासवदत्ता-प्रेमकथा।
१७.	लहरों से पूछिए	१९५६	प्यारेलाल बेदिल	बुध्द का जीवन-वृत्त, उदयन।
१८.	राजतिलक	१९६१	शिवसागर मिश्र	छठी सदी ई.पू. रिपुंजय-पुलकेसन संघर्ष, अन्तत: बिम्ब सार का राज बनता।
१९.	वैशाली की दत्तक पुत्री	१९६१	शिवकुमार कौशिक	भिक्षुणी आम्रपाली।
२०.	मगध की जय	१९८०	शिवसागर मिश्र	५१७ ई.पू. से ४५६ के मगध का चित्र; बिम्बसार, अजातशत्रु।

१०. अब तुम ही बताओ	१९५६	प्यारेलाल बेदिल	वर्मा-कृत "चित्रलेखा" पर आधृत।
११. सम्राट चन्द्रगुप्त	१९५६	सत्यनारायण कस्तूरिया	चन्द्रगुप्त-चाणक्य, नंद की हार।
१२. अमिता	१९५६	यशपाल	अशोक।
१३. प्रियदर्शी अशोक	१९५६	हरिभाऊ उपाध्याय	"सम्राट्" की अपेक्षा "प्रियदर्शी" अशोक पर बल।
१४. उत्तरापथ	१९५७	यादवचन्द्र जैन	सिकन्दर।
१५. वीतशोक	१९६०	रामअवतार चौरसिया	अशोक का भाई।
१६. रानी तिष्यरक्षिता	१९६०	सत्यदेव चतुर्वेदी	तिष्यरक्षिता का अशोक से विवाह, उच्छृंखल विलासिता मौर्य साम्राज्य का पतन।
१७. विदिशा की देवी	१९६१	जगदीशकुमार "निर्मल"	असन्धिमित्रा-अशोक।
१८. महामन्त्री	१९६३	मोहनलाल महतो वियोगी	अशोक, अशोकका महामन्त्री राधागुप्त,
१९. आग और पानी	१९६४	रघुवीरशरण	चाणक्य।
२०. कुणाल की आँखें	१९६७	आनन्दप्रकाश जैन	अशोक-कुणाल।
२१. ज्वालामुखी के फूल	?	सुशीलकुमार	चाणक्य, चन्द्रगुप्त, नन्दराज, शकटार, राक्षस, पर्वतक, चन्दनदास, सेल्युकस, हेलेन।
२२. जीवनदान	?	रमेशचन्द्र झा	अशोक।
२३. मिट्टी बोल उठी	?	रमेशचन्द्र झा	चन्द्रगुप्त, चाणक्य।

२१.	महाश्रमण सुनें. उनकी परम्पराएँ सुनें!!	१९६३	कृष्णचन्द्र शर्मा	बुध्द के पुत्र राहुल की कथा बुध्द
२२.	श्रेणिक बिम्बसार		चन्द्रशेखर शास्त्री	बिम्बसार, बुध्द, महावीर, वैशाली की नगरवधू का उत्तर।
२३.	संन्यासी और सुन्दरी	१९५४	यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"	मनु, वासवदत्ता।
२४.	कलाविलासिनी वासवदत्ता	१९६०	देवदत्त शास्त्री	वासवदत्ता-उदयन।
२५.	तथागत	१९६६	नंदकिशोर आचार्य	बुध्द की जीवनी, देवदत्ता, प्रसेनजित बिम्बसार, अजातशत्रु।

५. मौर्यकाल [30५ ई.पू.-१८५ ई.पू.]

१.	चन्द्रगुप्त मौर्य	?	मिश्रबन्धु	चन्द्रगुप्त
२.	चित्रलेखा	१९३४	भगवतीचरण वर्मा	चन्द्रगुप्तकालीन कल्पना।
३.	वीर कुणाल	१९४७	किशोर साहू	अशोक-तिष्यरक्षिता, कुणाल।
४.	प्यारा भारत	१९५२	प्यारेलाल बेदिल	चन्द्रगुप्त-सिकन्दर।
५.	लुटकते पत्थर	१९५५	गुरुदत्त	अशोक, कुणाल।
६.	सामन्त बीजगुप्त	१९५६	बनकाम सुनील	भगवतीचरण वर्मा के "चित्रलेखा" पर आधृत।
७.	आचार्य चाणक्य	१९५६	यतीन्द्र	चाणक्य
८.	आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य	१९५६	सत्यकेतु विद्यालंकार	चाणक्य
९.	महामन्त्री चाणक्य		रणधीर जी धीर	चाणक्य

12701
A

६. शुंग-काल [१८५ ई.पू.–७५ ई.पू.]

१.	इरावती [अपूर्ण]	१९३७	जयशंकर प्रसाद	बृहस्पतिमित्र [बृहद्रथ] पुष्यमित्र शुंग,
२.	पुष्यमित्र [शुंग]	१९४५	मिश्रबंधु	अन्तिम मौर्य राजा बृहद्रथ का वध।
३.	जयवासुदेव	१९४७	रामरतन भटनागर	"प्रसाद" की अधूरी "इरावती" का पूर्तिप्रयास; अग्निमित्र, पुष्यमित्र।
४.	पुष्यमित्र	१९६१	गुरुदत्त	बृहद्रथ, सेनापति पुष्यमित्र महर्षि पंतजलि।
५.	सत्य के अवरोध	१९६८	लक्ष्मण शाक द्वीपीय	पुष्यमित्र।
६.	सेनानी पुष्यमित्र	१९७३	सत्यकेतु विद्यालंकार	पुष्यमित्र का बृहद्रथ मौर्य को उखाड़ना। यवनराज दिमित्र को खदेड़ना।

७. यवन-शक-कुषाण काल [७५ ई.पू.–३०० ई.]

१.	विक्रमादित्य	१९४६	मिश्रबन्धु	मालवधिपति विक्रमादित्य भर्तृहरि, कवि भास, शकों की हार ई.पू. ५७।
२.	महाकवि गुणाढ्य	१९४६	बेनीप्रसाद वाजपेयी मंजुल	"बृहत्कथा मंजरी" के रचयिता।
३.	सुमंगला	१९५१	"	महाराजा कनिष्क के लड़के वाशिष्क-हुविष्क।

४.	पुनरुध्दार	१९५३	कंचनलता सब्बरवाल	चन्द्रमाल, १५०-३५० ई. भारशिवों से कुशनों का विनाश।
५.	धान्य भिक्षु	१९५८	रमेश चौधरी "आरिगपूड़ि"	रुद्रदमन, आचार्य,नगार्जुन, नागार्जुन कोण्डा का निर्माण।
६.	कालिदास	१९६०	संतोष व्यास	शकारि विक्रमादित्य कालीन किन्तु ई.पू. प्रथम शती।
७.	सुहाग के नूपुर	१९६०	अमृतलाल नागर	महाकवि इंगगोवन के तमिल महाकाव्य शिलप्पादिकारम पर आधृत।
८.	विक्रमादित्य साहसांक	१९६१	गुरुदत्त	विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त, ध्रुवदेवी, रामगुप्त।
९.	अवन्तिराजा	१९६३	यादवचन्द्र जैन	गर्दभिल्ल के पुत्र विक्रमादित्य का शकों को मार भगाना।
१०.	मालवा की माटी	१९६५	सम्पतलाल पुरोहित	महाराज गंधर्वसेन की मृत्यु विक्रमादित्य का शकों को मालवा से मार भगाना।
११.	साक्षी है क्षिप्रा	१९६८	ज्ञान भारिल्ल	अवंतिका-नरेश गर्दभिल्ल और आचार्य कालक।
१२.	शकारि विक्रमादित्य		राजीवलोचन अग्निहोत्री	विक्रमादित्य।

८. गुप्तकाल [३००-५५० ई.]

१.	चंद्रगुप्त विक्रमादित्य	१९४२	मिश्रबन्धु	सन् ३८०-४१४ ; चन्द्रगुप्त, महाकवि कालिदास, ध्रुव-देवी, रामगुप्त।

२.	जययौधेय	१९४४	राहुल सांकृत्यायन	३५०-४०० ई. का समय ; चन्द्रगुप्तद्वारा रामगुप्त एवं शकराज का वध।
३.	विस्मृत यात्री	१९५४	राहुल सांकृत्यायन	५१८-५८६ ई. का समय, बौध्द भिक्षु नरेन्द्रयश को सिंहल एवं चीन-यात्रा।
४.	ललितांगी	१९५७	यादवचन्द्र जैन	कुमारगुप्त-स्कन्दगुप्त-पुष्पगुप्त-संघर्ष।
५.	कला और सौंदर्य	१९७१	घनश्याम शरण भार्गव	प्रसाद के ध्रुवस्वामिनी नाटक से विशेष प्रभावित ; रामगुप्त, ध्रुवस्वामिनी ; कृष्णांक-चन्द्रा-प्रेमकथा।
६.	एकादानैमिषारण्ये	१९७२	अमृतलाल नागर	चन्द्रगुप्त, प्रथम-कुमारदेवी, समुद्रगुप्त।
७.	पुनर्नवा	१९७३	हजारीप्रसाद द्विवेदी	समुद्रगुप्तकालीन भारत।

९. गुप्तोत्तर काल [५५०-७१२ ई.]

१.	बाणभट्टकी आत्मकथा	१९४६	हजारीप्रसाद द्विवेदी	बाणभट्ट
२.	चीवर	१९५१	रांगेयराघव	राज्यश्री, हर्ष का चीवर से बौध्दभिक्षु बनना।
३.	अर्हत का शाप	१९५४	जान ओ हिन्द	हर्ष-शशांक।
४.	सम्राट् हर्षवर्धन	१९५६	सत्यनाराण कस्तूरिया	हर्ष का सारा जीवन, राज्यश्री, हूण-आक्रमण, चीनीयात्री ह्वैसांग।

५.	पत्रलता	१९५६	गुरुदत्त	हर्ष, बाणभट्ट, शशांक, देवगुप्त।
६.	सम्राट गुहादित्य	१९६५	शत्रुघ्नलाल	राजपूत गहिलौत शाखा के आदि पुरुष राजा गोह पर आधृत।
७.	हर्षवर्द्धन ["जन-प्रदीप" जालंधर में प्रकाशित]	१९६८-६९	चन्द्रकांत भारद्वाज	हर्ष, राज्यश्री, दिवाकर मित्र, हूणों का भारतीय समाज में विलय।

१०. राजपूत-काल [७१२-१००० ई.]

[सत्ता के पुनःस्थापना का युग]

१.	प्रभाबाई	१९४६	बेनीप्रसाद वाजपेयी मंजुल	सिंध; मुहम्मदबिन कासिम-दाहिरसेन।
२.	जब आकाश रो पड़ा	१९५०	राजबहादुर सिंह	सिंध; मुहम्मदबिन कासिम--दाहिर-युध्द।
३.	धूनी का धुआँ	१९५८	रांगेयराघव	गोरखनाथ, कण्हपा, भर्तृहरि, मत्स्येन्द्रनाथ।
४.	बप्पारावल	?	मनु शर्मा	बप्पा रावल, मानसिंह मौर्य [मानमौरी] महेन्द्र।
५.	दिग्विजय	१९५६	गुरुदत्त	स्वामी शंकराचार्य।
६.	सुल्तान और निहालदे	१९६५	लक्ष्मीनिवास	राजस्थानी लोककथा के नायक-नायिका प्रतिहार वंशीय सुल्तान और निहालदे की प्रेमकथा।
७.	शैलाधीश	१९६५	शत्रुघ्नलाल शुक्ल	बप्पा रावल

११. राजपूत-काल [१०००-१२०६ ई.]
[सत्ता का विकेन्द्रीकरण और पतन]

१.	बारहवीं सदी का वीर जगदेव परमार	१९००	रामजीवन नागर	जगदेव परमार।
२.	पृथ्वीराज चौहान	१९०१	जयन्तीप्रसाद उपाध्याय	धारा नगरी के राजा उदयादित्य के पुत्र की वीरता।
३.	पृथ्वीराज चौहान	१९०२	बल्देवप्रसाद मिश्र	पृथ्वीराज चौहान।
४.	वीर पत्नी	१९१२	यशोदा देवी	संयोगिता की वीरता, पृथ्वीराज, महम्मद गोरी, जयचन्द।
५.	अनंगपाल	१९१६	दुर्गाप्रसाद खत्री	ग्यारहवीं शती का मध्य।
६.	चौहानी तलवार	१९१८	हरिदास मानिक	पृथ्वीराज।
७.	केन	१९३०	कृष्णानन्द गुप्त	कालिंजर राज्य, धीरज-जमुना-प्रेम, मुहम्मद गोरी-राजा गण्ड।
८.	खवास का ब्याह [पूर्णाहुति]	१९३२	चतुरसेन शास्त्री	"पृथ्वीराज रासो" पर आधृत; जयचन्द; पृथ्वीराज-संयोगिता विवाह।
९.	प्रभावती	१९३६	निराला	कान्यकुब्जेश्वर जयचन्द; पृथ्वीराज-संयोगिता।
१०.	इरावती	१९४७	बृजरत्नदास	कीर्तिवर्मा-कर्णदेव-संघर्ष; इरावती-गोपाल प्रेम; प्रबोधचन्द्रोदय नाटक रचना।
११.	दिल्लीश्वरी	१९४६	देवीप्रसाद धवन "विकल"	पृथ्वीराज-मुहम्मद गोरी, कुतबुद्दीन ऐबक-कुत्सम।

१२.	देवांगना [मन्दिर की नर्तकी]	१९५१	चतुरसेन शास्त्री	दिवोदास, वज्रयानों की विकृति का अनावरण।
१३.	रक्त की प्यास	१९५१	चतुरसेन शास्त्री	भीमदेव-पृथ्वीराज का आपसी तथा मुहम्मद गौरी से संघर्ष।
१४.	सोमनाथ	१९५४	चतुरसेन शास्त्री	भीमदेव, चौला, महमूद गजनवी।
१५.	सोमनाथ	१९५५	ठाकुर श्रीनाथसिंह	सोमनाथ मन्दिर का ध्वंस एवं पुनर्निर्माण।
१६.	पहली हार	१९५५	रघुवीरशरण मित्र	"पृथ्वीराज रासो" पर आधृत।
१७.	लखिमा की आँखें	१९५७	रांगेयराघव	शिवसिंह रूपनारायण की पत्नी लखिमा देवी-विद्यापति।
१८.	तीसरा नेत्र	१९५७	आनन्दप्रकाश जैन	काशी, ग्यारहवीं सदी का यवन-आक्रमण, राजा बनार।
१९.	हरण-निमन्त्रण	१९६१	चतुरसेन शास्त्री	१९५१ में प्रकाशित अपने ही "रक्त की प्यास" पर आश्रित।
२०.	संस्कार	१९६२	रघुनाथसिंह	हुसैन [मुहम्मद गौरी का भाई]।
२१.	चित्ररेखा	१९६२	श्रीकृष्ण माथुर	"पृथ्वीराज रासो" पर आधृत; मुहम्मद गौरी की प्रेमिका वेश्या चित्ररेखा।
२२.	पिथौरा की पद्मिनी	१९६२	श्रीकृष्ण माथुर	पृथ्वीराज चौहान-पद्मिनी।

२३. चारुचन्द्रलेखा	१९६३	हजारीप्रसाद द्विवेदी	सातवाहन, सीदी मौला।
२४. प्रतापी आल्हा ऊदल	१९६३	श्रीयुत पथिक	"पृथ्वीराज रासो" पर आधृत।
२५. शाह और शिल्पी	१९६७	ज्ञान भारिल्ल	विमलशाह।
२६. अमृतपुत्र	१९७०	ज्ञान भारिल्ल	गुजरात-महाराज भीमदेव द्वितीय, लवण प्रसाद, तेजपाल
२७. नालंदा	१९७०	इकबालबहादुर देवसरे	नालंदा शिक्षा-केन्द्र की पतन-कथा
२८. रक्तकथा	१९७०	यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र"	राजस्थानी लोक-कथाओं पर आधृत सामंती तनक के खूनखराबों की कथा।
२९. खजुराहो की नगरवधू	१९७१	शालिग्राम मिश्र	चंदेल महाराज धंगदेव का सुबुक्तगीन को हराना; खजुराहो की पृष्ठभूमि।
३०. सूर्यरथ	१९७२	उमाशंकर	कोणार्क का सूर्य-मंदिर; शिल्पी बिसू महाराणा; उत्कल-नरेश नरसिंहदेव [१२३८-६४]।
३१. गजनी का सुलतान [तूफान फिर आया]	?	ओमप्रकाश शर्मा	महमूद गजनवी, भीमदेव, सोमनाथ पर महमूद का आक्रमण; चौला, सन् १०२५ से आरम्भ।
३२. विषकन्या	?	ओमप्रकाश शर्मा	ग्यारहवीं शती; पाटलिपुत्र-नरेश समरसेन, रूपपुरी का बीरसेन, उत्कलपति जयवर्धन।

३३.	किन्नरी	१९७२	शालिग्राम मिश्र	धांगदेव के पुत्र गंडदेव का शासन, [१००१–१११८] विद्याधार, महमूद की हार, महामात्य प्रभास।
३४.	देवनगरी का स्वप्न	१९७३	शालिग्राम मिश्र	खाजुराहो की पृष्ठभूमि "किन्नरी" की श्रृखंला में।

१२. सल्तनतकाल [पूर्व-मुगल मुस्लिम काल; १२०७–१५२६ ई.]

१.	हम्मीर	१९०४	गंगाप्रसाद गुप्त	हम्मीर।
२.	सुल्ताना रज़िया बेगम वा रंगमहल में हलाहल	१९०४	किशोरीलाल गोस्वामी	रज़िया बेगम।
३.	मल्लिकादेवी वा बंगसरोजिनी	१९०५	किशोरीलाल गोस्वामी	नवाब तुगरलखां [बंगाल]।
४.	पद्मिनी	१९०५	गिरिजाशंकर	पद्मिनी।
५.	वीरांगना [प्रथम संस्करण] पद्ममावती [दि. संस्करण]	१९११ १९१७	पं. रामनरेश त्रिपाठी	अलाउद्दीन का आक्रमण, पद्मिनी का सतीत्व।
६.	महारानी पद्मिनी	१९१२	बसंतलाल शर्मा	रत्नसेन-पद्मिनी-प्रेमकथा।
७.	भीमसिंह	१९१५	चन्द्रशेखर पाठक	अलाउद्दीन-चित्तौड़-पद्मिनी, गोरा बादल।
८.	लालचीन	१९१६	ब्रजनंदनसहाय	बह्मनी-सुल्तान गयासुद्दिन और लालचीन।
९.	विचित्र वीर	१९१६	मुरारीलाल	अलाउद्दिन खिलजी का काल।

१०. वीरमणी	१९१७	श्यामबिहारी मिश्र एवं शुकदेवबिहारी मिश्र	अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड़ पर आक्रमण।
११. सोने की राखा या पद्मिनी	१९१७	पं. रूपनारायण	पद्मिनी।
१२. शरणवत्सल हम्मीर	?	शिवनारायण लाल	हम्मीर।
१३. गढ़कुंडार	१९२७	वृन्दावनलाल वर्मा	खंगारों का पतन १२८८; कुंडार [टीकमगढ़]।
१४. वीर बादल	१९२६	जगदीश झा "विमल"	गोरा-बादल की वीरता।
१५. रजिया	१९४७	धर्मेन्द्र	रजिया बेगम।
१६. मृगनयनी	१९५०	वृन्दावनलाल वर्मा	मानसिंह-मृगनयनी, ग्वालियर [१४८६-१५१६]।
१७. तैमूर	१९५१	धर्मेन्द्र	तैमूरलंग।
१८. मीरां प्रेम दिवानी	१९५३	रामचन्द्र ठाकुर	मीरां; राणा सांगा का पहला पुत्र भोज एवं तीसरा विक्रम।
१९. लोई का ताना	१९५४	रांगेयराघव	कबीर-लोई-कमाल।
२०. गढ़ रणथम्भोर	१९५५	श्रीराम वात्स्यायन तथा झुनझुनवाला	हम्मीर से अलाउद्दीन खिलजी की हार।
२१. सोने की राखा	१९५७	रघुवीरशरण मित्र	"पद्मावत" पर आधृत।
२२. राजकलश	१९५८	अमरबहादुर सिंह "अमरेश"	भारशिव क्षत्रिय राजा डल [डलमऊ का किला] तथा बाबर सैयद-पुत्री सलमा

			प्रेमकथा, सुल्तान इब्राहीम शार्कों।
२३. जब आवेगी काल घंटा	१९५८	रांगेयराघव	नाथपंथी चर्पटनाथ, हम्मीर, नामदेव, ज्ञानेश्वर, अलाउद्दिन खिलजी, जलालुद्दिन, उलगुखां।
२४. लालपानी	१९५९	चतुरसेन शास्त्री	सुल्तान मुहम्मद बेगड़ा, राव-खेंगार, कच्छ-गुजरात [१४७०-१५००]
२५. खून का टीका	१९६०	यादवेन्द्र शर्मा चंन्द्र	हम्मीर।
२६. प्रजाप्रिय प्रजेश	१९६१	वाल्मीकि त्रिपाठी	चूणावत, राणा लाखा, मोकल, राणा कुम्भा, सुल्तान मुहम्मद तुगलक की हार।
२७. पलकों की ढाल	१९६२	आनंदप्रकाश जैन	रजिय बेगम।
२८. बिना चिराग का शहर	१९६१	चतुरसेन शास्त्री	अलाउद्दीन, गुलाम मुहम्मद काफूर, कर्णदेव, कमलावती, देवलदेवी, उलगुखाँ, खिज्रखां।
२९. भुवन विजयम्	१८६२	उमाशंकर	कृष्णादेव राय, विजयनगर, रामराय।
30. किर्तिपुरुष कुम्भा		ज्ञान भारिल्ल	महाराणा कुम्भा, रावरण-मल, मुहम्मद खिलजी, ऊदा।
३१. त्याग का देवता	१९६३	परदेशी	मेवाड़-रायमलके अनुज सूरजमल।
३२. जय एकलिंग	१९६९	परदेशी	मेदिनीराय, महाराणा रायमल के लघु-भ्राता सूरज-

				मल, रायमल के पुत्रों को गृहकलह।
३३.	लकुमा	१९६९	बालशौरि रेड्डी	१३वीं शती कोंडबीडु राज्य आंध्र का कुमारगिरी-देवदासी लकुमा।
३४.	सूरज की डाल	१९७३	विश्वनाथ मिश्र	चित्तौड़ के राणा रायमल्ल संग्रामसिंह, पृथ्वीराज, जयमल का आपसी संघर्ष; इनका चाचा सूरजमल।

१३. मुगल-काल [१५२६-१७०७ ई.]

१.	तारा वा क्षात्र-कुल-कमलिनी	१९०२	किशोरीलाल गोस्वामी	अमरसिंह, सलावतखाँ, रोशनारा, जहान आरा।
२.	नूरजहाँ वा संसार सुंदरी	१९०२	गंगाप्रसाद गुप्त	नूरजहाँ।
३.	वीरबाला	१९०३	बाबू लालजीसिंह	उदयपुर-राणा राजसिंह के सरदार चंदावत एवं हाड़ा-रानी।
४.	वीरजयमल वा कृष्णाकांता	१९०३	गंगाप्रसाद गुप्त	अकबर, चित्तौड़ का जयमल।
५.	पूना में हलचल वा बनवासी कुमार	१९०३	"	दलजीतसिंह, शिवाजी, शाइस्तखाँ।
६.	कुँवरसिंह सेनापति	१९०३	"	औरंगजेब-काल, महाराष्ट्र, सेनापति कुँवरसिंह।
७.	नूरजहाँ बेगम वा जहांगीर	१९०५	मथुराप्रसाद शर्मा	नूरजहाँ।
८.	नूरजहाँ	१९०५	श्यामसुन्दरलाल	नूरजहाँ।

९.	ताजमहल वा फतह-पुरी बेगम	१९०७	जयरामलाल रस्तोगी	मुमताज।
१०.	किशोरी वा वीरबाला	१९०७	जयरामदास गुप्त	अकबर की नीचता, मेवाड-किशोरी की वीरता।
११.	काश्मीर पतन	१९०७	जयरामदास गुप्त	बीरबल-मृत्यु, काश्मीर पर १५८६ में अधिकार।
१२.	महाराणाप्रतापसिंह की वीरता	१९०७	हरिदास माणिक	राणा प्रताप।
१३.	सौन्दर्य-कुसुम वा महाराष्ट्र का उदय	१९०६	ठाकुर बलभद्रसिंह	शिवाजी और बीजापुर के सुलतान के संघर्ष में शिवाजी-की वीरता।
१४.	प्रभात कुमारी	१९०६	जयरामदास गुप्त	अमरसिंह-प्रभातकुमारी-मोरजुमला १६६१-६३।
१५.	रोशनारा या चांदणी और अंधेरा	१९०६	"	रोशनारा।
१६.	सोना और सुगंध वा पन्नाबाई	१९०६	किशोरीलाल गोस्वामी	अकबर कालीन।
१७.	लालकुँवर वा शाही रंगमहल	१९०६	किशोरीलाल गोस्वामी	
१८.	रानी पन्ना वा राजललना	१९१०	जयरामदास गुप्त	अकबर ["हिन्दू धर्म का गुप्त विरोधी"]
१९.	सिंहगढ़-विजय	१९१०	कृष्णाकांत मालवीय	शिवाजी।
२०.	विस्मृत सम्राट्	१९१०	ब्रजनन्दन सहाय	नूरजहाँ-खुर्रम-संघर्ष, खुसरो-पुत्र दाविद बख्श।

२१. सौन्दर्यप्रभा वा अद्भुत अंगूठी	१९११	ठाकुर बलभद्र सिंह	शिवाजी-रोशनारा-औरंगजेब।
२२. महाराष्ट्र वीर	१९११	बाबू रामप्रताप गुप्त	शिवाजी का जीवन।
२३. जुझार तेजा	१९१४	मेहता लज्जाराम शर्मा	तेजा।
२४. वीर चूड़ामणि	१९१५	अखौरी कृष्ण-प्रकाश सिंह	चूड़ामणि।
२५. सुरसुन्दरी	?	हरेकृष्ण जौहर	मुगलों का उदयपुर पर आक्रमण।
२६. राजपूत रमणी	१९१५	युगलकिशोर नारायण सिंह	मेवाड़-राणा राजसिंह के सरदार चन्दावत की पत्नी हाड़ी रानी की वीरता : औरंगजेब।
२७. रानी दुर्गावती	१९१७	बाबू श्यामलाल गुप्त	दुर्गावती।
२८. दुर्गा या आदर्श वीरांगना दुर्गा	१९१८ १९२२	शेरसिंह	दुर्गावती।
२९. सूर्यास्त	१९२२	गोविंदवल्लभ पंत	राणाप्रताप।
३०. शाहजादा और फकीर तथा उमरा की बेटी	१९२२	रघुवरप्रसाद	शाहजहाँ-शहरयार : लोदी-खाँ, जहाँनिरा।
३१. नरेन्द्रभूषण	१९२५	मातासरन मालवीय	बाबर के विरुद्ध युद्ध में राजपूती वीरता।
३२. प्रेमपथिक	१९२६	रामचन्द्र मिश्र	मुगल-मराठा-संघर्ष, शिवाजी माधव शांता-प्रेम।

३३. मुगल दरबार रहस्य उपनाम अमृत और विष	१९२८	रामकृष्ण शुक्ल	नूरजहाँ का शासन-काल, शाहजहाँ।
३४. वीर केशरी अमर-सिंह राठौर	१९२६	विश्वनाथ पोखरेल	अमरसिंह राठौर-तारा-सलावतखाँ।
३५. दिल्ली की शाह-जादी	१९३३	रामप्यारे त्रिपाठी	शिवाजी-औरंगजेब-संघर्ष शिवाजी-रोशनारा का तथाकथित प्रेम।
३६. एकत्रा	१९४६	गोविन्दवल्लभ पंत	अकबर, बीरबल, चित्रकार दशवंत-गायिका रागिनी।
३७. नूरजहाँ	१९४६	"	नूरजहाँ-जहाँगीर।
३८. रत्ना की बात	१९५४	रांगेयराघव	तुलसीदास।
३९. आलमगीर	१९५४	चतुरसेन शास्त्री	शाहजहाँ; औरंगजेब के सत्ता-हस्तगत करने और उसके बाद की कथा।
४०. प्रबल प्रतीक्षा	१९५५	कुँवर वीरेन्द्रसिंह	छत्रसाल।
४१. महाराणा प्रतापसिंह	?	चन्द्रशेखर पाठक	राणाप्रताप।
४२. शिवाजी का आशिर्वाद	१९५६	मनु शर्मा	शिवाजी का चरित्र, अफजलखाँ-वध।
४३. शराब और शबाब	१९५७	जान औ हिंद	जहांगीर नूरजहाँ।
४४. दरभिसंधि	१९५८	राधेश्याम विगत	नूरजहाँ-काल, ओरछा-नरेश जुझारसिंह का भाई हरदयाल सिंह।
४५. बुंदेला	१९५८	श्रीशरण	छत्रसाल।
४६. आलिंगन	१९५९	उमादेवी	मेदिनीराय-मणिमाला; बाबर की भारत विजय, इब्राहीम लोदी।

४७.	शिवनेर केशरी	१९५९	यादवचन्द्र जैन	शिवाजी का जीवन।
४८.	साका	१९५९	जगदीश कुमार निर्मल	मेदिनीराय-बाबर-संघर्ष।
४९.	मेरी भव बाधा हरो	१९६०	रांगेयराघव	बिहारी।
५०.	प्रवीनराय	१९६०	अमरबहादुरसिंह "अमरेश"	केशव, अकबर, रहीम, प्रवीनराय
५१.	हिना के हाथ	१९६०	"	मुगल [शाहजहाँ आदि] अन्तःपुरों की विलासिता।
५२.	विक्रमांग	१९६०	वाल्मीकि त्रिपाठी	राणा सांगा-बाबर।
५३.	आंधी की नीवें	१९६१	रांगेयराघव	महारानी लक्ष्मी, प्रताप, अकबर, शक्तिसिंह, रहीम।
५४.	सह्याद्रि की चट्टानें	१९६१	चतुरसेन शास्त्री	१६५९-८०, शिवाजी-औरंगजेब-तानाजी।
५५.	जौहर	?	गोविन्दसिंह	बाबर, सेनापति जफर, राजकुमारी चन्द्रवती, राजकुमार सूर्यसिंह, ज्वालासिंह।
५६.	जयमेवाड़	?	गोविन्दसिंह	राणा प्रताप, अकबर, शक्तिसिंह, मानसिंह, अमरसिंह।
५७.	दाराशिकोह	१९६२	अवधप्रसाद बाजपेयी	दाराशिकोह-औरंगजेब।
५८.	किरणप्रभा	१९६२	सत्यदेव चतुर्वेदी	छत्रसाल एवं उसकी रानी किरणप्रभा।
५९.	गंगा की धारा [१-२]	१९६४ — १९६५	गुरुदत्त	अकबर, राणाप्रताप, गुरु अर्जुनदेव, गुरु अंगद, मानसिंह जोधाबाई।

६०. महारानी दुर्गावती	१९६४	वृन्दावनलाल वर्मा	गोंडवाना की वीर दुर्गावती, दलपतशाह, शेरशाहसूरी, अकबर का सेनापति आसफखाँ।
६१. गढ़मण्डल की रानी	१९६५	श्रीयुत पथिक	दुर्गावती।
६२. सूर्य का रक्त	१९६५	मनहर चौहान	सम्भाजी।
६३. जहांगीर	१९६६	श्रीराम शर्मा "राम"	जहांगीर।
६४. केसरिया पगड़ी	१९६६	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	दुर्गादास।
६५. जयविजय	१९६६	वाल्मीकि त्रिपाठी	हेमचन्द्र, शेरशाह सूरी, अकबर।
६६. राह का पत्थर	?	विंध्याचलप्रसाद गुप्त	दुर्गादास, औरंगजेब और उसका लड़का अकबर।
६७. सूना आसमान	१९६७	बलवन्तसिंह	विजयनगर का ध्वंस १९६५ : रामराय।
६८. सुल्ताना चांदबीबी	१९६७	महेशकुमार	चांदबीबी-अकबर।
६९. खण्डहर बोल रहे है	१९६८	गुरुदत्त	शिवाजी-औरंगजेब।
७०. दुरभिसंधि	१९७०	वाल्मीकि त्रिपाठी	छत्रसाल।
७१. जय जंगल धार बादशाह	१९७०	धर्मेन्द्र शर्मा	बीकानेर-नरेश कर्णसिंह का पुत्र, औरंगजेब।
७२. ओरछा की नर्तकी	१९७०	इकबालबहादुर देवसरे	प्रवीनराय, इन्द्रजीतसिंह, अकबर, केशवदास, बीरबल।
७३. माई एहड़ा पूत जण	१९७०	सत्यशकुन	राणाप्रताप, अमरसिंह, अकबर।

७४.	तांबे के पैसे	१९७१	आनन्दप्रकाश जैन	विजयनगर का ध्वंस रामराय।
७५.	दीपकराग	१९७२	गोपीकुमार कौशल	तानसेन।
७६.	लालकिला	१९७२	चतुरसेन शास्त्री	बाबर से लेकर अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना तक।
७७.	सुल्तान-ए-मालवा	१९७२	इकबालबहादुर देवसरे	माण्डू, अकबरकालीन बाज-बहादुर-रूपमती-प्रेमकथा।
७८.	बालू की दीवार	१९७२	श्रीराम शर्मा "राम"	औरंगजेब-शाहजहाँ, जघान्य कृत्यों पर पश्चाताप।
७९.	शाहजादी गुलबदन	?	ओमप्रकाश शर्मा	अकबर, बीरबल: सलीम [शेखू] का विद्रोह।
८०.	विद्रोही जागीरदार	?	ओमप्रकाश शर्मा	जहांगीर, गाजीपुर का जागीरदार आफताबखाँ।
८१.	मानस का हंस	१९७२	अमृतलाल नागर	तुलसीदास।

१४. मुगल-साम्राज्य का पतन [१७०७-१७५२ ई.]

१.	हृदयहारिणी वा	१८९०	किशोरीलाल गोस्वामी	सिराजुद्दौला, नरेन्द्रसिंह, मीरजाफर सेठ अमीचन्द।
२.	लवंगलता वा आदर्श बाला	१८९०	किशोरीलाल गोस्वामी	सिराजुद्दौला-क्लाइव।
३.	पानीपत [नाना फड़नवीस]	१९०२	बलदेवप्रसाद मिश्र	नाना फड़नवीस।
४.	कनक कुसुम वा मस्तानी	१९०४-१४	बलदेवप्रसाद मिश्र	बाजीराव पेशवा मस्तानी
५.	विराटा की पद्मिनी	१९३६	वृन्दावनलाल वर्मा	फर्रुखसियर का राज्य-काल विराटा, दलीप नगर [झांसी, दतिया]।

६.	टूटे काँटे	१९५४	वृन्दावनलाल वर्मा	मोहनलाल, नूरबाई मुहम्मद शाह, नादिरशाह का आक्रमण : १७३९।
७.	एक ही रास्ता	१९५६	सुदेश रश्मि	सरफराज का पतन, अलीवर्दी का उत्थान, बंगाल।
८.	पेशवा की कंचनी	१९५७	उमाशंकर	बाजीराव पेशवा-मस्तानी-प्रेमकथा।
९.	जहाँदारशाह	१९५९	वाल्मीकि त्रिपाठी	लाल कुँवरि-जहाँदारशाह
१०.	बाजीराव मस्तानी	१९६१	ज्वालाप्रसाद केशर	बाजीराव पेशवा [द्वितीय] तथा मस्तानी की प्रेमकथा।
११.	सत्ता और संघर्ष	१९६३	वाल्मीकि त्रिपाठी	तथाकथित बादशाह-निर्माता सैयद बंधुओं का उत्थान-पतन।
१२.	पूना से पानीपत	१९६५	देवेन्द्रप्रसाद शर्मा	सदाशिवराव भाऊ अहमदशाह, पानीपत का तीसरा युध्द १९६१, बाजीराव-मस्तानी।
१३.	कोहिनूर का हरण	१९६५	गोविन्दवल्लभ पंत	नादिरशाह का आक्रमण।
१४.	नादिरशाह	?	गोविन्दसिंह	नादिरशाह।
१५.	लालकुँवर	?	गोविन्दसिंह	औरंगजेब के बाद उसके परिजनों में संघर्ष।
१६.	नीली घोड़ी का	१९६९	ओमप्रकाश शर्मा	मुहम्मदशाह रंगीला, नादिरशाह का आक्रमण।

१५. आधुनिक युग का आरम्भ [१७६२-१८५७ ई.]

[अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना से सन् ५७ की क्रांति तक]

१.	गुलबहार या आदर्श भ्रातृस्नेह।	१९०२	किशोरीलाल गोस्वामी	नवाब मीरकासिम-क्लाईव।
२.	सौतेली माँ या अन्तिम युवराज	२९०६	जयरामलाल रस्तोगी	बहादुरशाह।
३.	लखनऊ की कब्र या शाहीमहल-सरा [आठ हिस्से]	१९०६-१६	किशोरीलाल गोस्वामी	नसीरुद्दीन-दुलारी।
४.	नवाबी परिस्तान या वाजिदअली शाह	१९०८	जयरामदास गुप्त	लखनऊ के अंतिम नवाब की ऐयाशी।
५.	गदर का फूल [रूपवती]	१९२०	शिवनाथ शर्मा	वाजिदअलीशाह।
६.	पतन	१९२७	भगवतीचरण शर्मा	वाजिदअलीशाह।
७.	गदर	१९३०	ऋषभचन्द्र जैन	नाना और अजीमुल्ला, सन् सत्तावन की क्रांति।
८.	कुसाहिबू	१९४०	वृन्दावनलाल वर्मा	भरतगढ़ [दतिया] उन्नीसवीं शताब्दी।
९.	झांसी की रानी	१९४६	वृन्दावनलाल वर्मा	लक्ष्मीबाई, सन् ५७ की क्रांति।
१०.	कचनार	१९४७	वृन्दावनलाल वर्मा	धामोनी रियासत [सागर] का राव दिलीपसिंह।
११.	शाहआलम की आँखें	१९४७	इंद्र विद्यावाचस्पति	१७८७ की घटना, शाह आलम।

१२.	झाँसी का सूरज	१९४८	ओमप्रकाश शर्मा	सन् ५७ की क्रांति, बहादुरशाह।
१३.	महारानी झांसी	१९४९	शांतिनारायण	लक्ष्मीबाई, सन ५७ की क्रांति।
१४.	स्वर्णदुर्ग	१९४९	जान ओ हिंद	तुलाजी अंग्रे।
१५.	बहती गंगा	१९५२	शिवप्रसाद मिश्र "रुद्र"	काशी-केन्द्रित, १७५० से आरंभ, पूर्वार्धि ऐतिहासिक।
१६.	शतरंज के मोहरे	१९५५	अमृतलाल नागर	सन ५७ की क्रांति की, पूर्व-पीठिका।
१७.	नाना फड़नवीस	१९५५	उमाशंकर	नाना फड़नवीस, नारायण-राव, माधवराव, बाजीराव हरीपंत फड़के।
१८.	अहिल्याबाई	१९५५	वृन्दावनलाल वर्मा	सन् १७९८ से पूर्व इंदौर, सूबेदार मल्हारराव के पुत्र खंडेराव की रानी।
१९.	बेकसी का मजार	१९५६	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	सत्तावनी क्रांति, बहादुरशाह दिल्ली।
२०.	अठारह सौ सत्तावन	१९५६	गोविंदसिंह	सत्तावनी क्रांति।
२१.	सत्तावन	१९५६	केशवकुमार	
२२.	एक ही रास्ता	१९५६	सुदेश रश्मि	नवाब सरफराज का पतन, अलीवर्दी का उत्थान, राजपूत नारी की वीरता।
२३.	चेतसिंह का सपना	१९५६	गिरजाशंकर पाण्डेय	काशी-नरेश चेतसिंह का शुजाउद्दौला-वारेनहेस्टिंग्स से संघर्ष : १७८१।

२४.	माधवजी सिंधिया	१९५७	वृन्दावनलाल वर्मा	सन् १७६१-७२, माधवजी सिंधिया, सूरजमल, होल्कर, अहमदशाह अब्दाली।
२५.	कठपुतली के धागे	१९५७-५८	आनंदप्रकाश जैन	लखनऊ, नसीरुद्दीन के राज्यकाल का चित्र।
२६.	राना बेनीमाधव	१९५८	अमर बहादुरसिंह "अमरेश"	सत्तावनी क्रांति में बेनीमाधव।
२७.	सोना और खून	१९५८	चतुरसेन शास्त्री	अंग्रेजों के भारत-आगमन से लेकर सत्तावनी क्रांति के कुछ बाद तक।
२८.	अठारह वर्ष बाद	१९५८	गिरजाशंकर पाण्डेय	१७९२ का समय-चेतसिंह [१७८१] के १८ वर्ष बाद फिर कुँवर जगतसिंह का विद्रोह।
२९.	कावेरी के किनारे	१९५९	उमाशंकर	हैदरअली, मद्रास में अंग्रेजों की हार।
३०.	रायसीना की लपटें	१९६०	भगवद्दत्त शिशु	दिल्ली के गांवों में सत्तावनी क्रांति : मुरली-गोरी : बहादुरशाह।
३१.	वाजिद अली [शामे अवध]	१९६१	आनंदसागर श्रेष्ठ	लखनऊ, अवध के अन्तिम नवाब का चित्र।
३२.	रामगढ़ की रानी	१९६१	वृन्दावनलाल वर्मा	सत्तावनी क्रांति, आवंतीबाई की वीरता।
३३.	विद्रोही सरदार बाबू कुँवरसिंह	१९६३	श्रीयुत पथिक	सत्तावनी क्रांति में कुँवरसिंह।
३४.	आजादी की राह में	?	रमेशचन्द्र भानू	"

३५. टीपू सुल्तान	१९६४	यादवचन्द्र जैन	टीपू सुल्तान-अंग्रेज-संघर्ष।
३६. दिल पर एक दाग	१९६४	उमाशंकर	समरू, समरू बेगम।
३७. क्रांति के कंगन	१९६४	अमरबहादुरसिंह "अमरेश"	सत्तावनी क्रांति में अजीजन।
३८. मैसूर का शेर	१९६५	महेशकुमार	टीपू सुल्तान, हेरिस, वेल्सली।
३९. नानाराव पेशवा	१९६६	हिमांशु श्रीवास्तव	सत्तावनी क्रांति, नाना का जीवन।
४०. बिठूर के नाना	१९६७	आनंदसागर	सत्तावनी क्रांति, नानाराव तांत्या टोपे, अजीमुल्ला, टीकासिंह, भवानीसिंह अजीजन।
४१. शाहे अवध	१९६७	इकबालबहादुर देवसरे	वाजिद अलीशाह, लखनऊ।
४२. संक्रांतिकाल	१९६७-६८	यज्ञदत्त शर्मा	टीपू सुल्तान, रूसो, लिबिदेव, शाह, आलम।
४३. सात घूंघटवाला मुखड़ा	१९६८	अमृतलाल नागर	समरू बेगम।
४४. फौलाद का आदमी	१९६९	रामकुमार भ्रमर	अजीमुल्ला, सत्तावनी क्रांति।
४५. समराओं	१९७०	हरनामदास सहराई	१८४६ का सिक्ख-अंग्रेज युध्द तथा इससे पूर्व।
४६. विहान	१९७१	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	सत्तावनी क्रांति, कानपुर केन्द्र, नानाराव पेशवा, अजीजन।
४७. लखनऊ का जासूस	?	ओमप्रकाश शर्मा	लखनऊ का वाजिद अलीशाह।
४८. बेगम हजरतमहल	१९७३	इकबालबहादुर देवसरे	सत्तावनी क्रांति, हजरतमहल वाजिद अलीशाह।

१४. स्वतन्त्रता-आंदोलन का युग [१८५७-१९२० ई.]

१.	भारती का सपूत	१९५४	रांगेयराघव	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
२.	जमाना बदल गया [प्रथम दो भाग]	१९६२	गुरुदत्त	१८५७ से १९०७ तथा १९०७ से १९२० तक के भारत का चित्रण।

विदेशी इतिहासपर आधृत उपन्यास

१.	सुहराब रुस्तम	१९२४	पं. रामनाथ पाण्डेय	ईरानी उपाख्यान, पिता-पुत्र का आपसी युद्ध।
२.	मधुर स्वप्न	१९४६	राहुल सांकृत्यायन	ईरानी इतिहास, शाह क्वात् ४६२–५२६ ई.।
३.	सिकन्दर	१९६२	हिमांशु श्रीवास्तव	सिकन्दर का जीवन-वृत्त।
४.	मुमताज	१९७१	एम. एल. पाण्डेय	चंगेज खां का जीवन, उसकी प्रेयसी मुमताज और पोता हलाकू।
५.	मौत की सराय	१९७०	कृष्णचन्द्र शर्मा "भिक्खु"	फ्रांसीसी क्रांति १७७९, मेरी, सोल हवां लुई, डोफा, एलिजाबेथ।
६.	चंगेजखां	१९७२	श्री शरण	गोबी का मरुस्थल [एशिया] १२-१३ वीं शती : तेमुजीन के चंगेजखां बनने तक की कथा : हुलन, कुरेलन, टेलिफ।
७.	शंख सिंदूर	१९७३	रमानाथ त्रिपाठी	बंगला देश, मैमनसिंह जिला : १६ वीं शती के गाथागीतों पर आधृत : वंशीदास जयचंद्र।

८. नेपालेश्वर	१९७३ विराज	नेपाल देश, सन् १७७५-१८५७ : महाराज रणबहादुर शाह, सुरेन्द्रवीर विक्रमशाह जंगबहादुर, रानी राज्यलक्ष्मीदेवी।

इस प्रकार डॉ. सत्यपाल चुघजीने इतिहास के कालक्रमानुसार ऐतिहासिक उपन्यासों का यह वर्गीकरण अपने ग्रंथ में विस्तार से किया है।

यशपाल के ऐतिहासिक उपन्यास

प्रेमचन्दोत्तर कालमें हिन्दी उपन्यासों मे अपना अलग अस्तित्व रखनेवालो मैं यशपालजी का नाम लिया जाता है। इस काल का प्रारंभ डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा, रामचंद्र शुक्ल शिलामुखा के "अमृत और विष" से होता है। उनके पश्चात यशपालजी का नाम लिया जाता है।

यशपालजीके ऐतिहासिक उपन्यास इस प्रकार है :-

१] "दिव्या" - [१९४५ ई.]
२] "अमिता" - [१९५६ ई.]
३] "झूठा-सच" - [१९५८ ई.]

यशपालने "दिव्या" और "अमिता" की रचना करके हिन्दी जगत् को यथार्थवादी ऐतिहासिक उपन्यास दिये है। यशपालने ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर अपनी कल्पना के पात्र और घटनाएँ निर्माण करके उनके द्वारा प्रगतिशील विचारोंको प्रतिष्ठापना की है। आपके उपन्यास ऐतिहासिक घटनाओं एवं प्रसंगोंका भावपूर्ण चित्रण मात्र नहीं है। ऐतिहासिक

वातावरण में कल्पना का सुंदर मिलाप है

यशपालने अपने ऐतिहासिक उपन्यासोंके लिए बौध्द काल चुना है, जिसमें दास वर्ग और अभिजात वर्गका संघर्ष, स्त्री वेश्या, नर्तकी का भोग्या स्वरूप, अहिंसा धर्म की आधार संहिता आदि बातोंका यथातथ्य चित्रण मिलता है।

१] "दिव्या" [सन १९४५] :-

"दिव्या" बौध्दकालीन ऐतिहासिक पृष्ठकथा को मार्क्सवादी यथार्थ के कमरे में बंद करके बनाया हुआ एक ऐतिहासिक लघुपट ही लगता है। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर लिखा वातावरण प्रधान उपन्यास है। इसका विस्तृत विश्लेषण तृतीय अध्याय में किया जा रहा है।

२] "अमिता" [सन् १९५६] :-

सम्राट अशोक के कलिंग विजय की कथा के उपर आधारित यह यशपालका दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है। उपन्यास की नायिका अमीता के कहने से अशोक का क्रूर शासक हृदय कलिंग की मनुष्य-हानि देखकर पिघल गया और अशोक अहिंसावादी बौध्द मतानुगामी अत्यंत मर्मस्पर्शी रूपमें उद्घाटित किया है।

३] "झूठा-सच" [सन् १९५८] :-

"झूठा-सच" यशपालजीके सभी उपन्यासमें सर्वश्रेष्ठ रचना है उसकी गिनती विश्व के दस महानतम उपन्यासों में की जाती

है। इस उपन्यासका मुख्य विषय है - "जीवन का प्रेम"। देश के बँटवारे से उत्पन्न विषय स्थिति एक प्रकार की छोटी-मोटी प्रलय ही थी - ऐसा प्रलय जिसमें व्यक्ति अपनी सारी आस्था खो देता है। "झूठा-सच" का उद्देश्य व्यक्ति की खोयी हुयी आस्था उसे फिर लौटकर देना है। यशपाल की यह रचना हिन्दी की सर्वोत्कृष्ठ यथार्थवादी रचना है। संक्षेप में कथावस्तु - यह बृहद उपन्यास दो भागोंमें विभाजित है। -

१] वतन और देश [१९५८]

२] देश का भविष्य [१९६०]

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूपमें उपन्यास के बारेमें कहा जाता है कि उपन्यास मनुष्य की बाहरी और भीतरी प्रवृत्तियों को स्पष्ट कर जीवन को प्रेरणा देनेवाली विधा है। वह दिशा निश्चित करनेवाली है, जो कि भूत का स्पष्टिकरण और वर्तमान का विश्लेषण करते भविष्य के निर्माण का संकेत देता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास की अपेक्षा कल्पना का आधिक्य रहता है। पर कल्पना का आधार भी ऐतिहासिक तत्व ही होता है। जिस तरह एकही ऐतिहासिक विषयपर विभिन्न इतिहासकार विभिन्न प्रकारसे लिखते है, उसी तरह ऐतिहासिक उपन्यासकारभी एक ही विषयको विभिन्न दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते है। हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की परम्परा किशोरीलाल गोस्वामी के "स्वर्गीय कुसुम-कुमारी" उपन्यास से प्रारम्भ होती है। हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास लेखन का आरम्भ प्रेमचन्द पूर्व काल में हुआ। उसका विकास

प्रेमचन्द काल में होने लगा और प्रेमचन्दोत्तर काल में वह चरम सीमा तक पहुँच गया। हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य पर नजर डालते ही एक बात उभरती है कि उसमें विषय का वैविध्य। भारतीय प्राचीन इतिहास से लेकर विभिन्न कालखंडों की मानसिकता को आँकने का प्रयास किया गया है। इतिहास के मूल तथ्यों को लेकर काल्पनिकता के सहारे आज के यथार्थ को प्रस्फुटित करना ही उनका उद्देश्य रहा है।

द्वितीय अध्याय

संदर्भ सूची

१] प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य- पृ. ६०

२] वामन शिवराम आपटे - संस्कृत हिन्दी कोश पृ.१७४

३] प्रधान संपादक रामचंद्र वर्मा - मानक हिन्दी कोश - पृ.३०७

४] मूल संपादक -श्यामसुंदरदास बी.ए. - हिन्दी शब्द सागर [पृ.छा] - पृ. ५१०

५] डॉ.सुषमा त्यागी - प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास और कला पृ.५

६] रामनारायण सिंह "मधुर" - हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास पृ.१७

७] रामनारायण सिंह "मधुर" - हिंदी के ऐतिहासिक उपन्यास पृ.१७

८] रामनारायण सिंह "मधुर" - हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास पृ.१७

९] रामनारायण सिंह "मधुर" - हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास पृ.१८

१०] रामनारायण सिंह "मधुर" - हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास पृ.१८

११] शांतिस्वरूप गुप्त - हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास और मृगनयनी पृ.२६

१२] शांतिस्वरूप गुप्त- हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास और मृगनयनी पृ.२५

१३] रामचंद्र वर्मा - संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर पृ. १४४

१४] वामन शिवराम आपटे - संस्कृत हिन्दी कोश पृ.१३०

१५] श्री आर्थर मील - ए स्टडी ऑफ इंग्लिश फिक्शन- सेत्य एडयुकेटर पृ. २४

१६] बी.एम चिंतामणी - ऐतिहासिक उपन्यासोंमें कल्पना और सत्य पृ.१

१७] डॉ.गोविंदजी - हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासोंमे इतिहास प्रयोग पृ.१०

१८] गणेशन एस.एन. -हिन्दी उपन्यास साहित्य अध्ययन पृ.४७,४८

१९] रामनारायण सिंह "मधुर" - हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास पृ.४१

२०] डॉ.सत्यपाल गुप्त - हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास एवं विकासेतिहास पृ. ३५

२१] डॉ.सत्यपाल गुप्त - हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास एवं विकासेतिहास पृ. ३५

२२] डॉ.सत्यपाल गुप्त - हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास एवं विकासेतिहास पृ. ४५२ से ४७८ तक